Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का पुरावलोकन

Regional Institute of Education
LIBRARY

अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :-

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं। साहित्य का सावधानीपूर्वक पुनरावलोकन अनुसंधान के संबंधित क्षेत्र में जानकारी प्रदान करता है तथा उसके क्षेत्र की सीमा में स्थित चरों को चुनने में मदद करता है, कार्य की पुनरावृत्ति को रोकता है, पूर्व में किया गया अध्ययन वर्तमान अध्ययन के लिए आधारशिला का कार्य करता है। साहित्य के पुनरावलोकन के माध्यम से एक अनुसंधानकर्ता भावी अनुसंधानों के लिये एक अच्छा परिदृश्य बनाता हैं। साहित्य का सृजन पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को वर्तमान अध्ययन से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययनों का एकत्रित तथा स्वीकृत करने में सहायक होता है। पूर्व के अध्ययनों का एकीकृत संग्रह अनुसंधानकर्ता को सम्बन्धित शोध को पहचानने में भी मदद करता हैं।

''व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है, अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है, ज्ञान के अथाह भंडार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।''

(बेस्ट–1959)

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :-

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को किस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है, उस में वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है, तथा निम्नलिखित उद्देश्य पूर्ण करती है।

1. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण

2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को पूर्व में किये गये शोधकार्य की पुनरावृत्ति करने से रोकता है।

4. पूर्व अनुसंधानों से अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।

5. उपयुक्त शोध विधियों के चयन में मदद करता है।

6. परिकल्पना को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायक होता है।

7. तुलनात्मक अध्ययन व तत्संबंधी व्याख्या हेतु आंकड़ों का निर्धारण करने में मदद करता है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व हैं।

Regional ... LIBRARY Bhopal

2.3 शोध से संबंधित साहित्य :-

प्रस्तुत समस्या से पूर्व कार्य का पुनरावलोकन इस प्रकार है।

1. **शर्मा शिवकुमार (1955)** ने राजस्थान राज्य के उदयपुर जिला के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया और पाया गया कि अधिकांश अध्यापक कम वेतन, समाज में सम्मान की कमी, बार–बार स्थानान्तरण के कारण व्यवसाय पसंद नहीं करते।

2. **स्याल सावित्री (1955)** ने राजस्थान राज्य के जिला बीकानेर शहर के माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया और पाया कि अध्यापिकाओं को अल्प वेतन, समाज में कम सम्मान तथा घर से दूर नियुक्ति होने से आने–जाने में काफी समय व अर्थ का अपव्यय होता है।

3. **शर्मा सत्यनारायण (1966)** ने एस.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का अध्ययन किया और पाया गया कि मुख्यतः कक्षा शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण

विद्यालय प्रशासन और संगठन तथा अन्य समस्याओं अधिकतर होना शिक्षण कार्य नीरस लगता है।

4. **शर्मा भंवरलाल (1966)** ने राजस्थान राज्य के जिला बांसवाड़ा के पंचायत समिति घाटोल के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि अध्यापक को आवास एवं पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं है। अध्यापक अपने बच्चों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं करा पाते हैं। गांव में आवश्यक शैक्षिक सामग्री उपलब्ध नहीं होती है।

5. **मेहता पारसमल (1962)** ने ग्रामीण स्तरीय अध्यापकों की रचनात्मक एवं सेवा संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों को स्थानीय नेताओं द्वारा परेशान कर उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है।

6. **व्यास अमरचंद (1971)** ने राजस्थान राज्य के जिला बीकानेर शहर प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं को जानने का प्रयास किया और पाया कि 75 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि अतिरिक्त अन्य कार्यों में नियोजित करना। उपयुक्त योग्यता प्राप्ति पर पदोन्नति न देना, पुस्तकालयों में समय पर पुस्तकें न मिलना और उच्च अधिकारियों से उपेक्षित व्यवहार सहन करना बताया। 60 प्रतिशत अध्यापकों ने रूचिकर विषय अध्यापन हेतु न मिलना एवं शिक्षण कालांश में अन्य कार्य करना बताया।

7. **कुंडलिया लक्ष्मण एल (1983)** ने गुजरात राज्य के खेड़ा जिला कि माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि आर्थिक, समयसर पाठ्यपुस्तकों न मिली से, (विद्यार्थी) छात्र परीक्षालक्षी दिखाई देते हैं, साथ–साथ पाठ्यक्रम छात्रों के वय, कक्षा अनुरूप न होने से अध्यापकों शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं कर पाते हैं।

8. **श्रीनिवासन वी. (1992)** ने तीन राज्यों गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान में प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण सामग्री व उपकरणों के वितरण व उपयोगिता का अध्ययन ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड के तहत किया और पाया कि 83.2 प्रतिशत

Regional Institute of Education LIBRARY

प्राथमिक विद्यालयों में दो कमरे हैं। 9.7 प्रतिशत विद्यालयों में शौचालय सुविधा उपलब्ध है। 20.4 प्रतिशत विद्यालयों में शिक्षक छात्र अनुपात उचित है।

9. **ठाकोर एम.एस. (1999)** के एम.एड् छात्र ने गुजरात राज्य के वलसाड़ा जिला के पिछड़े विस्तार की प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि पाठ्यक्रम, भाषा, विषयवस्तु कक्षा के अनुरूप अधिक है, कक्षा में

शैक्षणिक सामग्री कम उपलब्ध, छात्रों के बैठने हेतु कम कमरे, विषय अनुरूप संदर्भ साहित्य की कमी, अध्यापकों का अभाव, प्राचार्य और अधिकारियों एवं अभिभावकों के सहयोग की कमी, .कार्य अधिक एवं शिक्षण के अलावा अन्य कार्य दिये जाते हैं।